भारत की एकता की कडियाँ

Bharat Ki Ekata ki Kadiyan

Dr.Hasankhan K Kulkarni,
Associate Hindi Professor
Indira Gandhi Govt. First Grade,Womens College
Sagar-577401, Dist:- Shimoga, Karnatka.

आज-कल भारत की एकता की सख्त जरूरत है। हमारे देश में अनेक धर्म हैं। अनेक भषाएँ हैं तथा लोगों की संस्कृति अलग-अलग है। अधिकतर धर्म, भाषा, मंदिर, मस्जिद, पानी तथा प्रांतों को लेकर झगडा उत्पन्न होजाता है। जो देश की एकता में बाधा उत्पन्न होती है। भारत में लगभग 60% लोग अशिक्षित होने के कारण अधिक लोगों में राष्ट्रीय भावना का अभाव है। देश की प्रगति केलिए व्यक्ति शिक्षित होने के साथ-साथ उसमें नैतिक गुण भी होना चाहिए। इसलिए हमारे देश की आम जनता को अक्षर ज्ञान देकर उनमें देश की एकता की भवना जगाना आवश्यक है। सरसरी नजर से देखें तो देश की एकता की कडियाँ निम्न प्रकार हैं -

1) युवा शक्ति का सदुपयोग:-

आजादी के 64 वर्ष बाद भी हम देश में कौनसी प्रगती किए हैं गरीबी नहीं हटाए, देश को साक्षर नहीं बनाए, लोगों को रोजगार नहीं बनाए, केवल प्रगति हुई है तो जन संख्या की। 34 करोड की जगह आज 100 करोड से भी अधिक आबादि होगई है। निरक्षरता, गरीबी के कारण एड्स जैसे बुरी बीमारियाँ फ़ैल रही हैं। इसके लिए कारण युवा शक्ति ही है। समज सुधार तथा देश की एकता का कार्य युवा शक्ति ही कर सकति है। युवकों में शारीरिक, चिंतन शक्ति, आत्मा विश्वास रहता है इसका सदुपयोग होना चाहिए। युवा लोग न्याय तथा धर्म के रास्ते पर चल कर सरकार तथा समाज के चोरों को पकडना है। देश में बुरी तरह से फ़िले हुए आतंकवाद को मिटाना है।

समाज के वृध्द तथा बूढे झडने के पत्ते कुछ नहीं करसकते। आजादी के लिए वंदेमातरं का नारा युवा श्क्ति ही लगाई थी। चंद्रशेखर आजाद, सुभाष चंद्र भोस, महात्मा गांधी, वीर भगत सिंग , भुगदेव पांडे, मैलार महादेवप्पा, जैसे लोग प्राण पण, से लडकर अंग्रेज शासन को हिला दिए। शिवाजी , स्वामि विवेकानंद, अब्दुल कलाम आजाद, लालबहादुर शास्त्री , कित्तूर चेन्नम्मा, वनके वोबव्वा जैसे वीर नर-नारियों को आज समाज में हमें दुबारा देख्ना चाहिए।

समाज के बुजुर्ग ज्ञानी लोग अपने अनुभव के आधार पर ज्ञान, बुद्धि, मार्गदर्शन देते हैं । युवा लोग उस मार्ग में चलना चाहिए। हम भारत का इतिहास देखते हैं तो विदेशियों के चुंगुल से जो आजादी पाए हैं , उसके लिए खूब कीमत चुकानी पडी है। वीर भगत सिंग, महात्मा गांधी, मैलार महादेवप्पा, शहीद टिप्पु सुल्तान जैसे महान पुरुषों को प्राण बलिदान करना पडा। ऐसे खून की कीमत चुकाए हुए आजादी को युवा लोग सुरक्षित रखना चाहिए। युवक जतियता, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब का भेद भाव दूर करके राष्ट्र की प्रगती करना चाहिए। 80% ग्रामों में निवास करते हैं उनका सुधार होना आवश्यक है। दूर दृष्ठी वाले गांधिजी ग्राम उद्धार के लिए ग्राम सेवकों को नियुक्त किए थे। वे मुफ़्त में ग्रामों की सेवा, सफ़ाई कार्य करते थे आज हमारे युवा सरकारी कर्म चारी महीने की पहली तारीख को वेतन लेकर भी ग्रामों के मुग्ध नागरिकों की सेवा तन-मन से ठीक नहीं कर पाते।

युवा ! हमारा युवा समाज आज कौनसा रासता पकडा है? यह बडी अफ़सोस की बात है। आज के युवक विलासी राजाओं से भी बडकर हैं शराब पीते हैं घुटका, तंबाकू, पान खाते हैं, सिगरेट पीते हैं, कोकोकोला पीते हैं यह सब आरोग्य केलिए हानी कारक है। संविधान शासन द्वारा इनका सेवन करना मना है। छि:! आज के युवक अधिकतर स्त्रियों को गौरव नहीं देते छेड्खानी करते हैं , मेहनत नहीं करते, मन लगाकर पढाई नहीं करते, बाद में इनको कोई नौकरी नहीं मिलती। जबतक माता पिता पालन पोषण करते हैं जबतक ठीक है, जब शादी करते तथा परिवार से अलग कर दिए जाते हैं, तो तब मेहनत न करने पर भीक मांगना पडता है। आजा ही हमारे युवक जाग जाना चाहिए नहीं तो हमारे देश को बुरे दिन देखने में देरी नहीं लगेगी।

2) राष्ट्र भाषा:-

बहु धर्म विविध संस्कृतियों का देश है। जिस तरह आजाद देश के राष्ट्रपति, प्रधान मंत्रि, मुख्यमंत्रि, और राष्ट्र पति भी स्वदेशी होते हैं, लेकिन हम विदेशी भाषा अंग्रेजी के लालच में पडे हैं। राष्ट्र भाषा को लेकर देश में जो वाद-विवाद चलरहा है दक्षिण के लोग हिंदी को राष्ट्र भाषा मान लेने तैयार नहीं है। भारत में संस्कृत, अंग्रीजी तथा हिंदी तीन प्रमुख भाषाएँ हैं। संस्कृत तथा अंग्रीजी बोलने वालों की संख्या बहुत कम है। देश के 80% लोग हिंदी बोलते हैं, समझते हैं। दक्षिण भारत के कुछ लोगों को छोडकर सारे देश के लोग इसका प्रयोग करते हैं। उत्तर भारत 7 राज्यों की राज भाषा तथा मातृ भाषा है। हिंदी भाषा का साहित्य संमृध्द है। रामानुजाचर्य, रामानंद, वल्लभाचार्य, कबीर, तुलसीदास, सूरदास, प्रेमचंद, महादेविवर्मा, प्रसाद , पंत, निराला आदि जैसे श्रेष्ठ लेखक अपने साहित्य की रचना हिंदी में किए हैं। हिंदी का व्याकरण तथा लिपि वैज्ञानिक है। प्रांतीय भाषाओं के साथ हिंदी का संबंध घनिष्ठ है, शब्दों में समनतएँ हैं। स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, सुभाषचंद्र भोस, महात्मा गांधीजी, बालगंगाधर तिलक, रवींद्रनाथ ट्यागोर, अब्दुलकलाम आजाद आदि लोगों ने हिंदी को ही राष्ट्र भाषा माना है। आजादी केलिए भारतियों को एकसूत्र में बांधने की भाषा हिंदी ही थी।

चैना, रूस, जापान, अमेरिका, पाकिस्तान, इंग्लैंड, अरब जैसे देशों में कहीं भी राष्ट्र भाषा को लेकर झगडा विवाद नहीं है। रूस में 66 भाषाएँ हैं फ़िर भी रूसी ही वहां की राष्ट्र भाषा, प्रमुख भाषा है। भारत देश में ही इसका विरोध 1937 ई. में तमिल नाडू के मधुरै में 'राष्ट्र भाषा हिंदी' विरोधी आंदोलन शुरुहुआ, इसमें 2 लोग शहीद हुए और 1198 गिरफ़्तार हुए थे। स्वतंत्रता के बद हिंदी को भारत की अधिकारिक भाषा मान लिया गया था, संविधान नियमों के अनुसर अंग्रेजी केवल 15 वर्ष तक ही राज करना था, जिसके बाद केवल हिंदी ही भारत की अधिकारिक भाषा बनना था। जब नेहरू प्रधान मंत्री थे। 26 जनवरी 1965 को हिंदी राज भाषा के रूप में लागू होना था। 25 जनवरी से मद्रास प्रेसेडेन्सी के मधुरै में छात्रों और युवकों द्वार आंदोलन शुरु हुए। दो मही ने तक चले इस आंदोलन में 2 पुलीस कर्मियों सहित 70 लोगों की मौत हुई। क्या यह हमारे अखंड भारत की स्थापना केलिए सही था? जबतक हम सब सोच समझ कर एक राष्ट्र भाषा को नहीं अपनाते तबतक हमारे देश की एकाता में अभद्रता महसूस होती रहेगी। देश की एकता के लिए आजा हिंदी की सख्त जरूरत है।

3) साक्षरता:-

भारत में 60% लोग निरक्षर हैं इनको देश मालूम नहीं, देश की एकता मालूम नहीं ऐसे एक धर्म के लोग दूसरे धर्म के लोगों के साथा मिल-जुल्कर नहीं रहसकते, इस लिए देश के लोगों को साक्षर बनाना चाहिए । 75% लोग निरक्षर स्त्रियाँ हमारे देश में पाई जाति हैं । शिक्षित स्त्री ही देश को अच्छे देश भक्त वीर पुत्रों को जन्म देसकती है। शिक्षित स्त्री में सौ गुरुजनों की शक्ति होती है। जिस घर में शिक्षित स्त्री होती है वह घर स्वर्ग बन जाता है। आज हमारे समाज को शिवाजी की माँ जिजा बाई, गांधीजी की माँ पुतली बाई तथा कित्तूर चेन्नम्मा, झांसी की रानी लक्ष्मिबाई, वनके वोबव्वा, इदिरागांधी जैसे वीर नारियों की जरूरत है। सुशिक्षित नारी भी देश की एकता में अपना योगदान दे सकती है।

4) विदेशी व्यामोह का त्याग:-

हमारे देश के नागरिकों की एक आदत है कि वे विदेशी वस्तुओं पर मोहित होजाते हैं। हम स्वदेशी वस्तुओं को अपनाना चाहिए। विदेशी कंपनियों के वस्तुओं को त्यागना चाहिए। कोकोकोला, पेप्सी, जापानी वाच, जापानी गाडियाँ, कोरिया के मोबैल, लैट, कपडे, आदि वस्तुओं को त्यागना और स्वदेशी वस्तुओं को अपनाना चहिए और प्रेम से उपयोग करना चाहिए । इस से हमारे देश की आर्थिक प्रगति भी होगी लोगों का रोजगार बढेगा। युवा श्क्ति का सदुपयोग होता है। देश स्वावलंबी बनेगा, हमारे देश के युवकों में यह जानकारी होना चाहिए। रोजगार युवा देश की एकता में अपना हाथ बंटाएँगे।

5) देश की एकता प्रदर्शित करनेवाली फ़िल्में:-

आज कल हमारे युवकों पर फ़िल्मों का प्रभाव भारी तथा जल्द होता है। हमारे युवा चल-चित्र के नायक (Hero) का अनुकरण बहुत खूबी से करते हैं। वह कैसे कपडे पहनता है वैसे ही कपडे पहनते हैं, अगर वह घुटनों पर फ़टे कपडे पहनता है, तो युवक लोग भी फ़टे कपडे पहन ने लगते हैं। नायक अथवा नायिका अधनंगे होकर घूमते हैं, तो बडे-बडे शहरों में बहुत जल्दी इसका प्रभाव पडता है। अधनंगे, फ़टे कपडे पहन कर आदि मानव बंदर की पहचान देने लगते हैं। नायक कैसी कटिंग करता है वैसी ही कटिं करने लगते हैं। इस से समाज भी कूरूप बनजाता है। इसलिए प्रभावी माध्यम फ़िल्मों के माध्यम से देश की एकाता को प्रदर्शित किया जाय तो देश की अखंडता और एकता में बधा नहीं उत्पन्न होती।

उपसंहार के तौर पर हम कह सकते हैं कि हमारे देश के युवा लोग ही इन कार्यों को कार्य रूप में लासकते हैं। युवा शक्ति अणुबांब की तरह होती है, वह चाही तो देश की रक्षा करसकती है अथवा उसका नाश भी कर सकती है। युवा सिगरेट, गुटका, शराब, तंबाकू सेवन छोडकर 100 साल जीने की शपथ लेकर समाज सुधार कार्य करना चहिए। सरकार तथा युवा शिक्षित लोग बिगडों को सुधारना तथा देश और समाज का उध्दार करना चाहिए।